लौह पुरुष सरदार पटेल : भारतीय एकता के शिल्पी

- दवे वैभव कुमार नवनीतलाल

छात्र (हिंदी विषय) नलिनी अरविंद एण्ड

टी. वी पटेल आर्ट्स कॉलेज , वल्लभ विद्यानगर ।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्र-निर्माण के इतिहास में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण और अद्‌वितीय है। वे केवल एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के निर्माता और राष्ट्रीय एकता के सशक्त शिल्पी भी थे। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, कठोर अनुशासन, स्पष्ट निर्णय-क्षमता और राष्ट्रहित के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण ही उन्हें "लौह पुरुष" कहा गया। भारत जैसे विशाल और विविधताओं से परिपूर्ण देश को एक राजनीतिक और प्रशासनिक इकाई के रूप में संगठित करने का श्रेय मुख्यतः सरदार पटेल को ही जाता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के खेड़ा जिले के करमसद ग्राम में हुआ। उनका परिवार साधारण किसान परिवार था, जिससे उन्हें प्रारंभ से ही परिश्रम, अनुशासन और आत्मनिर्भरता के संस्कार प्राप्त हुए। प्रारंभिक शिक्षा के बाद उन्होंने कानून की पढ़ाई की और एक सफल वकील के रूप में अपनी पहचान बनाई। वे अपनी व्यावसायिक सफलता के कारण एक सुख-सुविधापूर्ण जीवन जी सकते थे, किंतु देश की दयनीय स्थिति और महात्मा गांधी के विचारों ने उनके मन को गहराई से प्रभावित किया। गांधीजी के संपर्क में आने के बाद उन्होंने अपने व्यक्तिगत हितों को त्यागकर राष्ट्रसेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।१

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सरदार पटेल ने संगठनकर्ता और कुशल प्रशासक के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाई। खेड़ा सत्याग्रह में किसानों के हितों की रक्षा के लिए उनका नेतृत्व और बारडोली आंदोलन में कर-वृद्धि के विरुद्ध संगठित जनआंदोलन उनकी जनसंपर्क क्षमता और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है। बारडोली आंदोलन की सफलता ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध

किया और जनता ने उन्हें "सरदार" की उपाधि से सम्मानित किया। इन आंदोलनों ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे केवल संघर्षशील नेता ही नहीं, बल्कि समाधान प्रस्तुत करने वाले व्यावहारिक नेता भी थे।

15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, किंतु स्वतंत्रता के साथ ही देश के समक्ष अनेक गंभीर समस्याएँ खड़ी हो गईं। इनमें सबसे बड़ी समस्या थी भारत की राजनीतिक एकता। उस समय देश लगभग 562 देशी रियासतों में विभाजित था, जिनमें से कई रियासतें स्वतंत्र रहने या किसी अन्य देश में विलय करने की आकांक्षा रखती थीं। यदि यह स्थिति बनी रहती, तो भारत एक कमजोर और अस्थिर राष्ट्र बन जाता। इस ऐतिहासिक चुनौती का सामना सरदार पटेल ने भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के रूप में किया। उन्होंने वी. पी. मेनन के सहयोग से कूटनीति, संवाद और आवश्यक होने पर कठोर नीति अपनाकर अधिकांश रियासतों का भारत में सफलतापूर्वक विलय कराया।२

जूनागढ़ का भारत में विलय, हैदराबाद में पुलिस कार्रवाई और अन्य रियासतों के साथ किए गए समझौते सरदार पटेल की दूरदर्शिता और दृढ़ नेतृत्व के प्रतीक हैं। इन निर्णयों से यह स्पष्ट होता है कि वे केवल आदर्शवादी नहीं थे, बल्कि यथार्थवादी और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाले नेता थे। यदि सरदार पटेल उस समय कठोर निर्णय नहीं लेते, तो आज का भारत संभवतः एक सशक्त और संगठित राष्ट्र नहीं बन पाता।३

सरदार पटेल प्रशासनिक एकता के भी प्रबल समर्थक थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सफल हो सकती है जब देश में एक मजबूत, निष्पक्ष और अनुशासित प्रशासनिक व्यवस्था हो। इसी कारण उन्होंने अखिल भारतीय सेवाओं की निरंतरता पर बल दिया। उनके अनुसार ये सेवाएँ राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों से ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और साहस की अपेक्षा की तथा स्वयं भी इन मूल्यों का पालन किया।४

व्यक्तिगत जीवन में सरदार पटेल अत्यंत सरल, अनुशासित और आत्मसंयमी थे। वे दिखावे, वैभव और लोकप्रियता से दूर रहते थे। उनका जीवन कर्म, त्याग और सेवा का आदर्श उदाहरण है। वे भावनात्मक भाषणों के बजाय ठोस कार्यों में विश्वास रखते थे। राष्ट्रहित के प्रश्न पर वे कभी भी समझौता करने को तैयार नहीं होते थे। उनके व्यक्तित्व में कठोरता के साथ-साथ करुणा और मानवीय संवेदना भी विद्यमान थी।

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई पटेल का संपूर्ण जीवन भारत की विविधता में एकता की भावना को साकार करने का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने न केवल भौगोलिक रूप से भारत को एक किया, बल्कि प्रशासनिक और राष्ट्रीय चेतना के स्तर पर भी देश को सुदृढ़ बनाया। इसलिए यह कहना पूर्णतः उचित है कि सरदार पटेल भारतीय एकता के शिल्पी थे, और उनका योगदान सदैव भारतीय इतिहास में अमर रहेगा।

संदर्भ सूची:

१. गांधी, राजमोहन - पुस्तक का नाम : पटेल : एक जीवन प्रकाशक : नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद: पृष्ठ ८८,१२०

२. मेनन, वी. पी. - पुस्तक का नाम : भारतीय रियासतों के एकीकरण की कथा प्रकाशक ओरिएंट लॉन्गमैन : पृष्ठ ६५,७३

३. मजूमदार, आर. सी - पुस्तक का नाम : भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (खंड-3) प्रकाशक : भारतीय विद्या भवन : पृष्ठ ४१०,४१८

४. पटेल, वल्लभभाई - पुस्तक का नाम : सरदार पटेल का पत्राचार (खंड-1)प्रकाशक : नवजीवन ट्रस्ट : पृष्ठ १३२,१३५